AYZ 19

ॐ श्रीगुरवे ॥ नमः भगवते ॥ अ

स्य श्रीभगवद्गीतामालामन्त्र

स्य ॥ श्रीभगवान्वेदव्यासऋषिः ॥

अनुष्टुप्छन्दः ॥ श्रीकृष्णपर

मात्मा देवता ॥ अशोच्यानन्व

शोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाष

से इति बीजम् ॥ सर्वधर्मा

श्री
गी
०

यो रुद्रः । भगवत्कं स्वाहा वृ ।

ष्टि शक्तिः ॥ सर्वं दुंभव

पाप्यें । भैरवयिद्युभिम

मुखे । तिकीलकम् ॥ वैरवि

र्द्वितिमभ्युल्लि । वैनंरक्ष

पावके । ॐ हृत्सुखं हुंवमः ।

नयेवंलोक्यचतुर्थे । नमेव

𑆪𑆠𑆴𑆩𑆑𑇀𑆠𑆇𑆠𑆴𑆇𑆬𑆮𑆵𑆲𑆁

𑆤𑆩𑆂 𑇅 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆁𑆱𑆼𑆪𑆩𑆫𑆶𑆲𑆴𑆪

𑆩𑆑𑆾𑆱𑆼𑆩𑆼𑆧𑆟𑆮𑆱𑆠𑆴𑆩

𑆲𑆟𑆲𑆁𑆪𑆩𑆂 𑇆 𑆩𑆴𑆲𑆩𑆮𑆓

𑆝𑆩𑆶𑆑𑆓𑆱𑆬𑆴𑆪𑆁𑆩𑆑𑆠𑆼𑆤𑆂 𑇆

𑆃𑆠𑆁𑆩𑆑𑆲𑆁𑆤𑆩𑆂 𑇆 𑆥

𑆱𑆾𑆪𑆠𑆶𑆥𑆟𑆁 𑇅 𑆩𑆠𑆼

धभकमुमओ।ङकविमुक

हुं नमः॥ ॐ ज्ञा विज्ञानविज्ञा।

हां नि॥

नंबलऋषितंवीविमओ।ङक

मउलकरपवुहुं नमः॥

ओंडकमहुंभः। कषघठङ्गट

मः ओं नंम्नुरत्तिमनु।ले।

सैंजजडिपवकः। कल्प

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

𑆘𑇀𑆚𑆳𑆤𑆩𑆶𑆢𑇀𑆫𑆳𑆪𑆑𑆸𑆰𑇀𑆟𑆳𑆪 𑇅 𑆓𑆵𑆠𑆳𑆩𑆸𑆠𑆢𑆶

𑆲𑆼𑆤𑆩𑆂 𑇆 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆾𑆥𑆤𑆴𑆰𑆢𑆾

𑆓𑆳𑆮𑆾 𑇅 𑆢𑆾𑆓𑇀𑆣𑆳𑆓𑆾𑆥𑆳𑆬𑆤𑆤𑇀𑆢𑆤𑆂 𑇆

𑆥𑆳𑆫𑇀𑆡𑆾𑆮𑆠𑇀𑆱𑆂𑆱𑆶𑆣𑆵𑆫𑇀𑆨𑆾𑆑𑇀𑆠𑆳 𑇅 𑆢𑆶𑆓𑇀𑆣𑆁𑆓𑆵

𑆠𑆳𑆩𑆸𑆠𑆁𑆩𑆲𑆠𑇀 𑇆 𑆮𑆱𑆶𑆢𑆼𑆮𑆱𑆶𑆠𑆁

𑆢𑆼𑆮𑆁 𑇅 𑆑𑆁𑆱𑆖𑆳𑆟𑆷𑆫𑆩𑆫𑇀𑆢𑆤𑆩𑇀 𑇆

𑆢𑆼𑆮𑆑𑆵𑆥𑆫𑆩𑆳𑆤𑆤𑇀𑆢𑆁 𑇅 𑆑𑆸𑆰𑇀𑆟𑆁𑆮𑆤𑇀𑆢𑆼

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

समुत्रं भाविकलोत्सुमिमस ।

त्रिष्टुभेवच ॥ ३ ॥ सर्वेसरद

वः सुरा । भसतो त्रितुल्लीवितः ॥

सर्वमपुपदाओ । सुवेत

पविसमस्रः ॥ ४ ॥ सपदयुंत

सम्कें । रलंठोधिठोकिं ॥

पदयुंत्रिसमेतथं । रलंठी

18

उतस्त्वमसि प्रौढदत्तप । वाद्

कर्मापः ॥ मन्दमैवाहृदर

त्रुससवृत्तुसलिठवत ॥ १३ ॥

उतः स्त्रैतैर्वैदत्तौ । गधदैस्

ग्नैर्भुतै ॥ मण्वः पाञ्जव

स्त्रैवामिवृ सत्त्वैयरसप्रतः ॥ १४ ॥

पञ्चस्यन्त्रैहत्वीके । मेरुवरं

23

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

३० ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥

३१ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

श्रितैर्यमूपुण्यं श्रिकृष्णापवाप

म ॥३३॥ श्रुयान्वा पितगःपुर ।१४

भुषैवरा पितभद: ॥ भतुल

ह्रुगपिइ । मूला मंगविमु

मुखा ॥३२॥ पतवृदनुभमृ

मिथ्यतिपि । भप्रभसन ॥ श्राप

तैलैका हृ मूदितः कैकृण

श्री
भगी
२२

[illegible]

[illegible]

मेकमेवं विष्णुमव्ययम: ॥२७॥

ओं श्रीभगवच्छ्रीउभुपाच

ब्रह्मविष्णुं यं येसमभ्युभी

दाक्षिणत्त्वमेवमेवमजनविषणी

नमामः स्वयम्भुवः ॥ नमस्य: ॥

श्री भगी ०१

ओंपरमयाविष्णुनसमुल्लतु

लोकमभ ॥ विमेमतु भिरवं

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ९ ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ १० ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

त्र ॥ १२ ॥ प्रत्वक्त्वङ्गभेदं ।

पिण्डैश्चैत्रं मगीपिलः ॥ प

कामैर्वैर्यूष्मैर्यष्ट्रमृस्वद्धृद

सठतमत ॥ १३ ॥ यावन्नैवोत्तद

तुङ्गं यञ्जैस्तैर्मठतदत ॥ उठ

तैः विष्कीत्रिंन यांदन्नित

दन्ते ॥ १४ ॥ वहयतेप्रिव

श्री ठगी ४४

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ४० ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ४१ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ४३ ॥ [illegible]

[illegible]

श्री
ठगी
४२

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अश्वकि मलं ॥ ४९ ॥ कमलं स्वद्रु

पञ्चादि कलत्रह्रस्वमनीषिणः ॥

हस्वरङ्गु विभिन्नञ्च पयोगस्तु

हस्तपयस ॥ ५० ॥ यस्त्वेद

कलिलं वस्त्रु चूडितागिश्वाडि ॥

उत्सङ्गाभि विचस्यं मेडवृष्टसू

उष्ट्र ॥ ५३ ॥ स्वाविपृडिमहा

𑆯𑆩𑆠𑆶𑆑𑆬𑆾𑆥𑆴𑇅𑆠𑆶𑆨𑆴

𑆧𑆬𑆩𑆱𑆶𑆠𑆶𑇆𑇑𑇔𑇆𑆠𑆠𑆯𑇀𑆫𑆵𑇅

𑆝𑆁𑆓𑆮𑆱𑆵𑆠𑇅𑆩𑆥𑆴𑆣𑆷𑇅

𑆘𑆮𑆴𑆱𑆳𑆪𑆼𑇅𑆪𑆼𑆓𑇅𑆩𑆼𑆱𑆷𑇅𑆫𑆵

𑆤𑆼𑆑𑇅𑆠𑆤𑆁𑆮𑆾𑇅𑆩𑆴𑆪𑇅

𑆓𑆼𑇅𑆤𑆳𑆥𑇅𑆮𑆴𑆝𑆵𑆪𑆼𑆥𑆳𑆪𑆂𑇆𑆱

𑆬𑆤𑆮𑆱𑇆𑆲𑆪𑆩𑆵𑆫𑆼𑆠𑆶𑆩

𑆯𑆵
𑆓𑆵
𑇓𑇒

लोकेस्मिन्द्विविधानिष्ठापु

राप्रोक्तामयानघ॥ज्ञान

योगेनसांख्यानांकर्मयोगे

नयोगिनां॥३॥नकर्म्मणाम

नारम्भान्नैष्कर्म्यंपुरुषोश्नुते॥

नचसंन्यसनादेवसिद्धिंस

मधिगच्छति॥४॥नहिकश्चि

श्री
गी
३५

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

37

𑆥𑆪𑆱𑇀𑆠𑆶𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆑𑆳𑆪 𑇗𑇓 ॥ 𑇐𑇓 ॥

𑆱𑆠𑇀𑆫𑆱𑇀𑆩𑆶𑆥𑆴𑆠𑇀𑆫𑆑𑆶𑆝𑆳𑆤𑆴 𑆥𑆠𑆬𑆱𑇀𑆠𑆶

𑆪𑆠𑇀𑆫𑆩𑆱𑇀𑆩𑆶𑆮𑆂 ॥ 𑆪𑆱𑇀𑆩𑆶𑆥𑆳𑆠𑆶

𑆥𑆠𑆴𑆠𑆴 𑆪𑆱𑇀𑆩𑆶𑆂 𑆑𑆱𑇀𑆩𑆩𑆱𑇀𑆩𑆶

𑆮𑆂 ॥ 𑇐𑇒 ॥ 𑆑𑆱𑇀𑆩𑆮𑆷𑆱𑇀𑆩𑆶𑆥𑆁𑆮

𑆠𑇀𑆫𑆴𑆮𑆶𑆥𑆱𑇀𑆩𑆩𑆱𑇀𑆩𑆶𑆮𑆁 ॥ 𑆠

𑆱𑆳𑆱𑇀𑆫𑆮𑆓𑆝𑆮𑆶𑆥𑆳𑆁𑆮𑆴𑆲𑆁𑆪

[illegible]

[illegible] ||3|| [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ||30|| [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

पार्थो धनुर्धरः । तत्र श्रीर्विजयो भूति-

र्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥७८॥

ओं तत्सदिति श्रीभगवद्गीतासूप-

निषत्सु ब्रह्मविद्यायां यो-

गशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवा-

दे मोक्षसंन्यासयोगो नामाष्टादशो-

ऽध्यायः ॥ श्रीभगवद्गीता ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

𑆥𑇀𑆫𑆱𑆳𑆢𑆮𑆫𑇀𑆢𑇀𑆣𑆴𑆠𑆁 𑆲𑆁𑆱𑆁 𑇅

[illegible]

𑆱𑆼𑆮𑆳𑆢𑇀𑆨𑆶𑆠𑆑𑆸𑆠𑆂 𑇆 𑆥𑆶𑆟𑇀𑆪𑆥𑆳𑆥𑆴

[illegible]

𑆨𑆑𑇀𑆠𑆴𑆮𑆫𑇀𑆠𑇀𑆩𑆳𑆮𑆲𑆸𑆠𑇀𑆱𑆶𑆒𑆂

[illegible]

𑆤𑆴𑆠𑇀𑆪 𑇔 𑇆 𑆥𑆚𑇀𑆖𑆳𑆑𑇀𑆰𑆫𑆥𑆫𑆴𑆮𑆸

[illegible]

𑆤𑆴𑆫𑇀𑆩𑆴𑆠𑆁 𑆥𑆫𑆩𑆁 𑆥𑆢𑆂 𑇆

[illegible]

𑆮𑆴𑆓𑆠𑆱𑇀𑆥𑆸𑆲𑆁 𑆥𑆫𑆁 𑆥𑆢𑆩𑇀

[illegible]

𑆩𑆠𑇀𑆫𑆷𑆥𑆑𑆩𑆂 𑇆 𑇕 𑇆 𑆤𑆴𑆠𑇀𑆪𑆁

[illegible]

𑆥𑆫𑆩𑆳𑆠𑇀𑆩𑆳 𑆤𑆥𑆫𑆩𑆳𑆠𑇀𑆩𑆳 𑇅 𑆠𑆂𑆥𑇀𑆫𑆱𑆴𑆢𑇀𑆣𑆑𑆫𑇀𑆩𑆑𑆫𑇀𑆠𑆴 𑆥𑆫𑆩𑆳𑆠𑇀𑆩

𑆓𑇀𑆫𑆁 𑆤𑆮𑆓𑇀𑆫𑆩𑇀𑆪𑆼𑆠 𑇅 𑆠𑆶

𑆠𑆠𑇀𑆱𑆫𑇀𑆮𑆵 𑆓𑆶𑆫𑆶𑆫 𑆥𑆫𑆩𑆳𑆠𑇀𑆩 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆓 𑇅 𑆥𑆫𑆩𑆳𑆠𑇀𑆩

𑆘𑇀𑆚𑆼𑆮𑆲𑆤𑇀𑆘𑇀𑆚𑆼𑆓𑆶𑆫𑆷𑆘𑇀𑆚𑆼𑆮𑆳𑆤𑇀𑆪

𑆱𑆫𑇀𑆮𑆼 𑆓𑆶𑆫𑆶𑆮𑆳 𑇅 𑆥𑆫𑆩𑆳𑆠𑇀𑆩 𑆠𑆠𑇀𑆱𑆫𑇀𑆮𑆼

𑆓𑆘𑇀𑆚𑆂 𑇆 𑆓𑆶𑆫𑆷𑆓𑆘𑇀𑆚𑆘𑇀𑆚𑆳𑆠𑇀𑆩𑆱𑇀𑆩𑆸𑆠𑆩𑇀 𑇅

𑆠𑆼𑆤𑆳 𑇅 𑆥𑆫𑆩𑆳𑆠𑇀𑆩 𑆪𑆮𑆠𑇀𑆱𑆫𑇀𑆮𑆠𑆴𑆬𑆴𑆤𑆳𑆥 𑇅 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆠𑆴

𑆪𑆼𑆤𑆽𑆮𑆘𑇀𑆚𑆳𑆤𑆴𑆠𑆂 𑇆 𑆥𑆫𑆁

𑆱𑆫𑇀𑆮𑆱𑆫𑇀𑆮𑆳 𑇅 𑆤𑆮𑆩𑆳 𑇅 𑆮𑆴𑆣𑆴 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆪 𑇅

𑆣𑇀𑆪𑆳𑆤𑆶𑆱𑆠𑇀𑆮 𑇅 𑆮𑆠𑇀𑆠𑆶𑆘𑇀𑆚𑆼𑆮𑆱

𑆱𑆫𑇀𑆮𑆱𑆫𑇀𑆮𑆥𑆳𑆤 𑆬𑆴𑆓𑇀𑆤𑆴𑆩𑆠𑆴 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆩𑆳 𑇅

𑆠𑇀𑆮𑆠 𑇆 𑇐 𑇆 𑆤𑆠𑆘𑇀𑆚𑆳𑆤𑆥𑆱

𑆱𑆳𑆠𑇀𑆮𑆴𑆑𑆴 𑆤𑆁𑆤𑆼 𑆓𑆠𑆱𑆼

𑆠𑇀𑆱𑆶𑆥𑇀𑆫𑆱𑆳𑆠𑇀𑆩𑆱𑇀𑆪𑆳𑆥𑆴𑆠𑆂 𑇆

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥

[illegible] ॥ ३५ ॥

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥

३६ ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानि-
भ्योऽपि मतोऽधिकः। कर्मिभ्यश्चा-
धिको योगी तस्माद्योगी भवा-
र्जुन ॥४६॥ योगिनामपि सर्वे-
षां मद्गतेनान्तरात्मना ।
श्रद्धावान्भजते यो मां स
मे युक्ततमो मतः ॥४७॥ इति श्री

श्री
गी
१३

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

150

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

तेऽओं [illegible]

ध[illegible] ॥ ०७ ॥ तेषां [illegible]

[illegible]

यस्याः कन[illegible]विमि[illegible]ते ॥

[illegible]

प्रि[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

मम[illegible] ॥ ०९ ॥ तमसः

[illegible]

म[illegible]

[illegible]

मतं ॥ [illegible] ॥

[illegible]

[illegible] ॥ ०३ ॥

[illegible]

[illegible] ||

[illegible]

[illegible] ||

[illegible] || [illegible] ||

[illegible]

[illegible]

[illegible] || [illegible] || इति श्रीभगवद्गी

[illegible]

तच्च संस्मृत्य संस्मृत्य रूपमत्यद्भुतं हरेः ।
विस्मयो मे महान् राजन् हृष्यामि च पुनः पुनः ॥७७॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥७८॥
इति श्रीभगवद्गी

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ॥ 1 ॥ [illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ॥ 2 ॥ [illegible]
[illegible] ॥

163

परमं पुरुषं दिव्यं । याति पार्था-

नुचिन्तयन् ॥ ८ ॥ कविं पुरा-

णमनुशासितारमणोर ।

णीयांसमनुस्मरेद्यः ॥ स-

र्वस्य धातारमचिन्त्यरूपं । आ-

दित्यवर्णं तमसः परस्ता-

त् ॥ ९ ॥ प्रयाणकाले मनसा-

श्री
गी
53

64

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

𑇖𑇖

𑆃𑆪𑆳𑆠𑆥𑆫𑆁𑆓𑆳𑆠𑆓𑆳 ||𑇐𑇓||

𑆑𑆫𑇀𑆠𑆷𑆗𑆼𑆢𑆾𑆃𑆢𑆠𑆶 | 𑆥𑆴𑆁𑆱𑆶

𑆓𑆠𑆶𑆴𑆢𑇀𑆣𑆩𑆂 || 𑆢𑆱𑇀𑆣𑆁𑆓𑆬

𑆛𑆥𑆠𑆶 | 𑆴𑆢𑇀𑆣𑆪𑆠𑆶𑆱𑇀𑆣𑆪𑆾𑆓

𑆤𑆂 ||𑇐𑇔|| 𑆃𑆩𑆥𑆼𑆢𑇀𑆣𑆥𑆑𑇀𑆫

𑆑𑇀𑆱 | 𑆥𑆼𑆬𑆩𑆪𑆩𑆩𑆱𑇀𑆠𑆶 || 𑆤

𑆥𑆮𑆠𑆶𑆃𑆢𑆑𑇀𑆫𑆂 | 𑆁𑆱𑆴

सिंपरभगत्तः ॥१५॥ तत्र

ज्ञुववर्गत्रिकः। पवगवीत्तु

वेलव ॥ भभयेहत्तुकेत्तु

य। पवलज्ञवविसृत्तः॥१७॥

भजरयगयदत्तुं। भदद

सृद्भेविसः॥ गत्तुंयग

भदसंत्तुं। डेदेगउविरि

श्री
भगी
३५

168

[illegible] ॥०७॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

श्री
गी
५०

𑆥𑆶𑆕𑆾𑆂 𑆩𑆪𑆳𑆂 𑆥𑆝𑆑𑆸𑆠𑆳

𑆬𑆘𑆰𑆶𑆤𑆝𑆪𑆳 ॥ 𑆪𑆱𑆝𑆶𑆂

𑆱𑆶𑆫𑆴𑆑𑆶𑆛𑆼𑆪𑆼𑆫𑆩𑆮𑆴𑆫𑆁

𑆝𑆤𑆬 ॥ 𑇓𑇓 ॥ 𑆪𑆝𑆑𑆬𑆼

𑆝𑆮𑆝𑆶𑆩𑆮𑆳𑆝𑆶𑆩𑆽𑆮𑆴𑆓

𑆫𑆂 ॥ 𑆥𑆪𑆳𑆝𑆪𑆳𑆝𑆶𑆑𑆬𑆁

𑆮𑆑𑆴𑆩𑆑𑆳𑆝𑆠𑆑 ॥ 𑇓𑇓 ॥

𑆱𑆶𑆬𑆓𑇀𑆤𑆫𑇀𑆑𑇀𑆰𑆓𑆠𑆾𑆲𑇀𑆪𑆼𑆠𑆼𑇅𑆪𑆾𑆓

𑆠𑆂𑆩𑆳𑆱𑆶𑆠𑆼𑆩𑆠𑆾𑇆𑆍𑆑𑆪𑆳𑆮

𑆯𑆳𑆮𑆠𑇀𑆠𑆶𑇅𑆩𑆢𑇀𑆪𑆪𑆳𑆮𑆠𑇀𑆠𑆶𑆠𑆼𑆥𑆂𑇆

𑇔𑇕𑇆𑆤𑆽𑆠𑆼𑆩𑆠𑆾𑆥𑆚𑇀𑆖𑆱𑇀𑆮𑆫𑇀𑆓𑆼𑇅𑆓𑆵

𑆫𑇀𑆮𑆳𑆠𑆴𑆑𑆘𑇀𑆚𑆳𑆤𑇆𑆅𑆩𑆲𑇀𑆮𑆼

𑆩𑆑𑆬𑆾𑆰𑇅𑆪𑆴𑆓𑆳𑆪𑆠𑇀𑆫𑆶𑆑𑆮

𑆬𑆫𑇆𑇔𑇗𑇆𑆮𑆼𑆫𑆼𑆰𑆶𑆪𑆬𑇀𑆬𑆰𑆶

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] 𑇅 𑇓𑇓 𑇅 [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

𑆯𑇀𑆫𑆵
𑆓𑆵
𑇓𑇓

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

178

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]



॥ ४ ॥

॥ ३० ॥

𑆩𑆠𑇅

श्री
ग्री
७३

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

187

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ३३ ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ३४ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

भरुः भभत्रेभ। भवभाभेपु

भमृते ॥३॥ वेभ्रिल्लवभमं

भेदः। ज्ञमाभहेंरानमनः॥

भापंस्: पंठवेठवेठ्यंमा

ठ्यमेवमा॥४॥ यादिंभभभ

उत्तुश्चिस्तु। पिरवंयमेयमः॥

ठवत्तिठवाकूडानं। भडूाव

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

भयमेवञ्ज्ञाङ्क्षं। वेज्ञं ध्यक
धेतु॥ कुडठव कुडे। मस्यवा
क्षगहृडे॥ ०४॥ वकुगद्द्धमे
धे। सिवाठञ्ज्ञविकुडयः॥ य
सिवकुडीकिस्रका। किंसुंघ
थडेधुम॥ ००॥ कथविस्टम
इयगिं। मुं भयरूयाशिमिसुय
ते॥

श्री
गी
०..

[illegible]

श्री
ग्गी
०.०

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

यज्ञांगस्यपयक्षिभिक्षु

कां ंदिभाल्लयः॥४५॥

यस्तुकुः भवव्क्ष्मां ंदेव

श्री ं यवागूः॥गाऽव

ं सितुरवः भिक्षुनक

पिलिभनिः॥४७॥उक्तेःसु

वसुमसुनां विक्षुनाम

अश्विनौ। गमामसुहृडमनोद्वि॥
गवाश्विभकरद्युश्विन्यै। स्तु
भगशिस्तृकवा॥३०॥ भज
गभगिरद्युभ्रं। भद्रंसैवद
भद्राव॥ पष्टद्यविष्टाविह
ं। वपः प्रवमडभजग॥
३४॥ मकगाग भकौषि।

श्री
गा
०२

𑆓𑆳𑆪𑆠𑇀𑆫𑆵𑆱𑆷𑆑𑇀𑆠𑆩𑆳𑆩𑆢𑆁 ॥ 𑆄

𑆩𑆮𑆁𑆩𑆳𑆘𑆩𑆵𑆝𑇀𑆘𑆩𑆳 । 𑆟𑆷𑆑𑆳𑆁

𑆇𑆩𑆳𑆑𑆫𑆂 ॥ 𑇓𑇕 ॥ 𑆱𑆷𑆇𑆱𑆷𑆑𑇀𑆠

𑆪𑆡𑆩𑆳𑆱𑇀𑆩𑆶𑆇𑆫𑆱𑇀𑆩𑆶 । 𑆫𑆳𑆱𑇀𑆩𑆶

𑆩𑆘𑆩𑆳 ॥ 𑆪𑆼𑆱𑇀𑆩𑆶𑆮𑆳𑆑𑆩𑆳

𑆪𑆼𑆱𑇀𑆩𑆶𑆱𑆾𑆁 । 𑆩𑆾𑆮𑆡𑆩𑆘𑆩𑆳 ॥

𑇓𑇗 ॥ 𑆮𑆑𑇀𑆰𑆵𑆮𑆁𑆮𑆳𑆩𑆪𑇀𑆪𑆼𑆮𑆱𑇀𑆩𑆶 ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥

[illegible]

[illegible] ॥ ७ ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ ३ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

𑆱𑆠𑆤𑇀𑆠𑆶𑆁𑆮𑆴𑆱𑆸𑆘𑇀𑆪𑆠𑆼𑆤𑆳𑆥𑆱 𑇆𑇑𑇐𑇆 𑆱𑆴𑆮𑆸

𑆃𑆢𑆱𑆢𑆱𑆩𑆸𑆑𑆼𑆮𑆱𑆶𑆓𑆳𑆥𑆱𑆢𑆶

𑆠 𑇆 𑆪𑆴𑆑𑆂 𑆱𑆩𑆼𑆱𑆷 𑆱𑆶

𑆱𑆶𑆫𑆢𑆤𑆶𑆘𑆂 𑇆𑇑𑇒𑇆 𑆠𑆼𑆑

𑆁𑆓𑆢𑆶𑆁𑆱𑆮𑆴𑆑𑆠𑆶𑆱𑆼𑆑𑆟 𑇆

𑆪𑆥𑆱𑆷𑆮𑆼𑆮𑆱𑆷𑆱𑆓𑆼𑆪

𑆠𑆮𑆱𑆶𑆬 𑇆𑇑𑇓𑇆 𑆠𑆠𑆂 𑆃𑆮𑆴𑆱

𑆯𑇀𑆫𑆵
𑆑𑆓𑆵
𑇓𑇐𑇐

𑆯𑇀𑆫𑆵𑆥𑆶𑆠𑇀𑆫𑆬𑆳𑆨𑆩𑇀𑆮𑆶𑆠𑆩𑆥𑇀𑆪𑆶𑆥𑆼𑆪

𑆩𑇅 ९१ 𑇅 𑆠𑆠𑆯𑇀𑆖𑆳𑆁𑆥𑆓𑆩𑆁𑆮𑆳𑆢𑇀

𑆇𑆓𑆁𑆁𑆯𑆶𑆮𑆴𑆯𑇀𑆫𑆶𑆩𑆥𑆳𑆁𑆓𑆮𑆴𑆟𑆁 𑇅

𑆑𑆳𑆫𑆪𑇂 𑆯𑆾𑆁𑆯𑆟𑆩𑆓𑆵𑆥𑆶𑆩𑆠

𑆇𑆟𑆁𑆥𑆩𑆑𑇀𑆰𑆾𑆩𑆠𑆼𑆩𑆼 𑇅 ९३ 𑇅 𑆩

𑆟𑆳𑆫𑆩𑆳𑆠𑆶𑆥𑆶𑆟𑆫𑆶𑆮𑆵𑆢𑆯𑆮

𑆇𑆫𑆁𑆑𑆩𑆳𑆥𑆴𑆯𑇀𑆫𑆢𑆼𑆇𑆩𑆳 𑇅 𑆪

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

णीर्वृत्तैः सर्वपुंसुष

भि॥ संसरगीयैंगपैयैण

त्यैः ॥७०॥ वह्निस्थैः सूर्य

सविषमान्तरं धूकर्णावि

ण्यावकावि ॥ कौनिस्विलय

समस्तेभ्यः संभूतेभ्यः पृतौ

दैत्यभक्तैः ॥७१॥ यावकली

स्मृ
ण्मी

१०२

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

भवन्तमाद्यं । न हि प्रजानामि

तव प्रवृत्तिम् ॥३१॥ श्रीभगवा

नुवाच ॥ कालोऽस्मि लोकक्ष

यकृत्प्रवृद्धो । लोकान्समाहर्तु

मिह प्रवृत्तः ॥ ऋतेऽपि त्वां न भ

विष्यन्ति सर्वे । येऽवस्थिताः प्रत्य

नीकेषु योधाः ॥३२॥ तस्मात्त्व

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

उवयकीनूः गजुक्षश्रतम

म्हुतेस॥ गक्षभिठीडविशि

मिमूवत्रिभवेरगमूनुराभमु

मञ्ः॥ ३० ॥ कभझतेवने

गमजनुजेगीयमेवद्गम्हु

श्री॥ सिकतु॥ भनत्रुसवेमङ्गाव
ठगी

३-१ वभुवनङ्कंभसमतुद्धांयड॥

[illegible] ॥ 31 ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ 2 ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

𑆓𑆕𑆴𑆩𑆳𑆩𑆶𑆒𑆳𑆤𑆑𑆂𑆉𑆠𑆴𑆪𑆴𑆬𑆴 ।

𑆑𑆕𑆪𑆼𑆩𑆶𑆥𑆳𑆠𑆩𑆥𑆶𑆟𑆮𑆂 ॥ 𑆉 ॥

𑆉𑆩𑆳𑆕𑆶𑆩𑆶𑆒𑆳𑆤𑆪𑆑𑆪𑆁 । 𑆫

𑆩𑆫𑆪𑆼𑆕𑆩𑆢𑆩𑆵𑆩𑆩𑆵𑆩𑆶𑆥 ॥

𑆥𑆴𑆠𑆮𑆥𑆕𑆩𑆳𑆥𑆼𑆮𑆩𑆳𑆥𑆶𑆂 । 𑆥𑆶

𑆪𑆂𑆒𑆪𑆪𑆕𑆢𑆩𑆴𑆫𑆮𑆩𑆴𑆑𑆶𑆤 ॥

॥ 𑆫𑆫 । 𑆩𑆩𑆑𑆥𑆮𑆁𑆟𑆴𑆠𑆴𑆩𑆢

𑆯𑇀𑆫𑆵
𑆜𑆓𑆵
𑇑𑇐𑇗

236

[illegible] ॥

[illegible]

[illegible] ॥

[illegible]

[illegible] ॥

[illegible]

[illegible] ॥

२३१

॥ श्रीभगवानुवाच ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ २१ ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

श्री
भगी
३..

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

मेवंविधोर्जुन ॥ ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन ।
प्रवेष्टुं च परंतप ॥ ५४ ॥ मत्कर्म
कृन्मत्परमो मद्भक्तः सङ्गवर्जि
तः ॥ निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स
मामेति पाण्डव ॥ ५५ ॥ इति श्री
भगवद्गीतासु । उपनिषत्सु ब्रह्मवि
द्यायां । योगशास्त्रे । श्रीकृष्णार्जुनसं

श्री
भगी

2.52

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

246

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

२५१९

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ०१ ॥ [illegible]

[illegible] ॥

[illegible]

[illegible] ॥ ०३ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

मगभेरमाविकरमगुरुहतं॥

१॥ श्मभगविंकुमरभिक्रस

दिंमक्वातुगलवम॥ भुवा

दियभवंमींयंमुदेमञाव

शियद:॥ ३॥ अन्नुयतेश्चवै

मगमरदकंगण्वम॥ ६॥

श्मगहुरु गद्वाविसः॥प

𑆥𑇀𑆫𑆴𑆪𑆁𑆓𑆶𑆫𑆱𑆑𑆫𑆤𑆩 ॥३॥ 𑆱𑆩

𑆠𑇀𑆫𑆴𑆓𑆤𑆑𑇀𑆰𑆴𑆥𑇀𑆫𑆓𑆂 । 𑆥𑆢𑆫𑆓𑆓

𑆢𑆳𑆩𑆴𑆰 ॥ 𑆢𑆴𑆤𑆶𑆪𑆩𑆓𑆳𑆩𑆴

𑆢𑆶𑆑𑇀𑆫 । 𑆩𑆶𑆑𑆁 𑆢𑆴𑆑𑆾𑆥𑆥𑆢𑆶𑆰𑇀𑆥𑆁 ॥

𑆩𑆳𑆪𑆮𑆤𑆼𑆪𑆓𑆼𑆫𑆑𑆼𑆑𑇀𑆫

𑆯𑇀𑆫𑆵 𑆓𑆾 — 𑆖𑆑𑆪𑆳𑆓𑆴𑆤𑆴 ॥ 𑆢𑆴𑆮𑆑𑇀𑆫𑆾

३३०७ — 𑆩𑆤𑆾𑆢𑆴𑆑𑆶𑆩𑆳𑆩𑆢𑆶𑆬𑆤𑆁𑆩𑆶𑆴 ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ १० ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ १४ ॥ [illegible]

[illegible]

𑆪𑇆 𑆃𑆁𑆑𑆶𑆯𑆩𑆶𑆢𑇀𑆫𑆳 𑆮𑆴𑆢𑇀𑆩𑆲𑆼 𑆪𑆁 [illegible]

[illegible] 𑆑𑆼𑆫𑆢𑆢 ॥ ०७ ॥ [illegible]

[illegible]

𑆢𑆩𑇆 𑆑𑆶𑆢𑆑𑆶𑆱𑆢𑇀𑆩𑆲𑆼 𑆪𑆁 [illegible]

[illegible] ॥ ०७ ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

259

2-60

कितुभधेमुगः॥ परमत्रु

त्रिय पृत्रे सुधेभिमद्रुमः

पः॥४३॥ यास्वं वेत्तुपुत्र

धंपृवाडिंयगुल्पैःभव॥ वि

केभवषवतुभरघितम

क्वयेवियःयत॥४४॥ पृथेव

ज्ञविपमस्तुकेयियज्ञवन

श्री
कगी

२०३

5263

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

𑆥𑆷𑆘𑆳𑆇𑆮𑆫𑆪𑆑𑆑𑇀𑆰𑇀𑆩 𑇅 𑆯𑇀𑆫𑆴𑆪𑆩

𑆨[illegible]𑆤𑆴𑆨𑆮𑆩𑆂 𑇆 𑆪𑆂𑆥𑆚𑇀𑆖

𑆇𑆇𑆰𑆑𑇀𑆰𑇀𑆩 𑇅 𑆑𑆫𑇀𑆠𑆶𑆁𑆃𑆥𑆲

𑆇 𑇆 𑆇 𑇆 𑆪𑆫𑆑𑇀𑆠𑆇𑆥𑆰𑆰𑆶𑆮

𑇅 𑆑𑆫𑇀𑆠𑆶𑆃𑆯𑆥𑆲𑆇 𑇆 𑆇𑆇𑆂

𑆮𑆘𑇀𑆚𑆳𑆮𑆴𑆰𑇀𑆟𑆶𑆁 𑇅 𑆫𑆶𑆢𑇀𑆫𑆳𑆁𑆥𑆱𑇀𑆠𑆶

𑆇𑆠 𑇆 𑇓𑇐 [illegible]𑆫𑆴𑆰𑇀𑆛𑆳𑆮𑆴𑆘𑇀𑆚𑆶

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

श्रीकृष्णार्जुनसंवादे
क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयो
गो नाम त्रयोदशोऽध्यायः॥ भगवानुवा
च॥ परं भूयः प्रवक्ष्यामि
ज्ञानानां ज्ञानमुत्तमम्॥ य
ज्ज्ञात्वा मुनयः सर्वे परां सि
द्धिमितो गताः॥१॥ इदं ज्ञा

अपस्तु । अगमाण्डूम

गतः ॥ अजोपि विप्रत्यग्रे ।

पूलयेत् विश्वविश्रा ॥ ३ ॥

अपयोदि अदण्ड्रक्ष्मा । अभि

ज्ञंकरण्डदना ॥ अप

वः अववक्षदं । ३६वा३

क्षर ॥ ३ ॥ अचयेविवक्रि

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥२॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥५॥ [illegible]

ंभवदेविनमोऽस्तु ॥ धूम्राय

नमूविशुभ्रै ॥ सुविश्वरूपाय

नमस्ते ॥ ३ ॥ सर्वंभूतयेनमस्तुभ्य

ते ॥ श्लः कलायनमस्ते ॥ नम

सर्वतत्त्वमः ॥ धूमायनमस्तुभ्य

श्री

शा

स्रुते ॥ ४ ॥ तत्सुसत्त्वविभो

२०७

यं ॥ सर्वकृद्वरिनमस्ते ॥ तत्त्वःस

212

𑆑𑆶𑆁𑆝𑆬𑆽𑆥𑇅𑆢𑆪𑆂 𑆩𑆶𑆁𑆝𑆩𑆬

𑆨𑆶𑆰𑆳 𑇆 𑇐 𑇆 𑆨𑆮𑆱𑇀𑆪𑆳𑆓𑇀𑆫𑆼𑆱𑆢𑆼

𑆨𑆴𑆂 𑇅 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆱 𑆇𑆥𑆫𑇀𑆪𑆖𑆶𑆝 𑇆

𑆱𑆁𑆪𑆳𑆝𑆳 𑆮𑆴𑆯𑇀𑆮𑆳 𑇅 𑆯𑇀𑆫𑆮

𑆑𑆶𑆁𑆱𑆢𑇀𑆮𑆨𑆴𑆢𑇀𑆢𑆲 𑇆 𑇐 𑇆 𑆬𑆼𑆯𑇀𑆖

𑆮𑆢𑇀𑆣𑆴𑆓𑆱𑆶𑆂 𑇅 𑆑𑆁𑆩𑇀𑆨𑆱𑆩𑆂

𑆱𑇀𑆪𑆘 𑇆 𑆩𑆸 𑆱𑆼𑆣𑆳𑆮𑆴𑆱𑇀𑆪𑆠𑆶 𑇅

𑆮𑆴𑆑𑆳𑆱𑇀𑆪𑆼𑆤𑆟𑆑 ॥𑇑𑇐𑇓॥ 𑆱

𑆥𑆷𑆑𑆫𑇀𑆩𑆼𑆥𑆮𑆳𑆠𑇀𑆠𑆶 𑆲𑇀𑆪 । 𑆪𑆶𑆰

𑆫𑇀𑆪𑆽𑆢𑆩𑆼𑆮𑆖 ॥ 𑆠𑆩𑆯𑇀𑆤𑆶𑆠

𑆮𑆴𑆰𑆪𑆼𑆰𑆶 । 𑆮𑆴𑆰𑆪𑆳𑆤𑇀 𑆠𑆶 𑆩𑆤𑆱

𑆫 ॥𑇑𑇐𑇓॥ 𑆪𑆱𑇀𑆪 𑆩𑆠𑇀𑆥𑆫𑆮𑆳𑆱

𑆠𑆶 । 𑆦𑆬𑆁 𑆪𑆳𑆠𑇀𑆫𑆢𑆑𑆶𑆝 ॥

𑆠𑆱𑇀𑆩𑆴𑆤𑇀 𑆩𑆲𑆴𑆁 𑆬𑆾𑆑𑆯 । 𑆮𑆤

𑆯𑇀𑆫𑆵
𑆓𑆵

𑇒𑇐𑇓

276

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

श्री
भगी
९३
५००

कौशिङ्गेभ्यो ज्ञुभ्यो नेत्रस्त्री
ठेक्वाडिपूर्वि ॥ क्विनामः क
वेयेडं ॥ भ्यो ज्ञुभ्यो नडिक्वतु ॥
३० ॥ भगवद्वरा ॥ पूकं
मापूवडिंतमदनेवराप
भुव ॥ नेत्रोभुमंपूवडाक ॥
विवडाविकं द्वाडि ॥ ३४ ॥ उरा

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

𑆱𑇀𑆠𑆶𑆠𑆴𑆩𑆴𑆫𑇀𑆨𑆑𑇀𑆠𑆴𑆨𑆳𑆫𑆥𑇀𑆫𑆑𑆫𑇀𑆰𑆽𑆂 𑇆

𑆨𑆮𑆳𑆩𑇀𑆧𑆶𑆣𑆳𑆮𑆴𑆲𑆳𑆓𑆵𑆫𑆶𑆟𑇀𑆟𑆠𑆵

𑆠𑆂 𑆨𑆠𑆱𑇀𑆩𑆸𑆠 𑇆 𑇓𑇕 𑇆 𑆱𑆁𑆱𑆳𑆫𑆼

𑆮𑆸𑆑𑇀𑆰𑆳𑆓𑇀𑆫𑆾 𑇅 𑆝𑆶𑆪𑆼𑆓𑆑𑆼𑆩

𑆮𑆼𑆠 𑇆 𑆨𑆓𑆶𑆟𑇀𑆘𑆓𑆠𑆵𑆲𑆼𑆠𑆶𑆂

𑇅 𑆮𑆸𑆑𑇀𑆰𑆖𑇀𑆗𑆳𑆪𑆳𑆪𑆑𑆬𑇀𑆥𑆠 𑇆 𑇓𑇖 𑇆

𑆮𑆸𑆑𑇀𑆰𑆼 𑆑𑇀𑆫𑆴𑆪𑆳𑆠𑆴𑆯𑆶𑆢𑇀𑆣 𑇅 𑆓𑆩

𑆯𑇀𑆫𑆵
𑆑𑆾
५००

𑆠𑆶𑆠𑆳𑆮𑆴𑆑𑆸। 𑆱𑆩𑆤𑆠𑆩𑆢𑆵𑆮𑆴𑆯𑆤

𑆣𑆵𑆩𑆼 ॥𑇔॥ 𑆤𑆩𑆶𑆥𑆩𑆼𑆢

𑆠𑆶𑆥𑆴𑆥𑆬𑆳𑆲𑆶𑆠𑆾। 𑆠𑆼𑆤𑆩𑆳𑆓𑆴

𑆢𑆴𑆥𑆩𑆥𑆸𑆠𑆸 ॥ 𑆓𑆩𑆶𑆠𑆶𑆩𑆼

𑆢𑆼𑆱𑆮𑆴𑆠𑆶𑆫𑆳𑆥𑆬𑆤। 𑆩𑆱𑆳

𑆩𑆼𑆫𑆶𑆱𑆷𑆠𑆼𑆤𑆢𑆴𑆠𑆶 ॥𑇕॥

𑆠𑆠𑆂𑆥𑆫𑆁𑆠𑆢𑆳𑆓𑆩𑆳𑆘𑆠𑆮𑆁।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ६ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

२८१

विकषाडे॥२॥मगींगयरव

धेडियञ्जुधूञ्जमडीमूः॥

गप्दीहूँआँडिमंयपाडिवयू

॥गहूंरिवमयपाडे॥३॥मिहूम

हुःभ्रमवंमुरमवंयधूल्ले

सी
कगी

वयु॥चण्डिमूम्यमवस्त्रायं।

५०२

विपयपरपमवडे॥७॥डत्तू

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥१०॥

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥११॥

[illegible]

मयेउपिलम॥यज्ञनुम

मियज्ञगो।उजुलि विद्धि

ममकम॥०३॥गमम वि

श्वज्ञकुउ विणयम्वदवे

ल्मः॥पाल्कमिमिधानिः

मवः।मेमेकुउ।मजुकः॥

श्री
गी
५०५

०३॥सदेवैम्राणिकुयुः।य

𑆢𑇀𑆮𑆳𑆮𑆴𑆩𑆸𑆥𑆶𑆫𑆶𑆰𑆸𑆬𑆾𑆑𑆼𑇅𑆑𑇀𑆰𑆫𑆱𑇀𑆖𑆳𑆑𑇀𑆰𑆫
𑆍𑆮𑆖𑇆𑆑𑇀𑆰𑆫𑆂𑆱𑆫𑇀𑆮𑆳𑆟𑆴𑆨𑆷
𑆠𑆳𑆤𑆴𑆑𑆷𑆛𑆱𑇀𑆡𑆾𑇁𑆑𑇀𑆰𑆫𑆇𑆖𑇀𑆪𑆠𑆼𑇆𑇑𑇖𑇆
𑆇𑆠𑇀𑆠𑆩𑆂𑆥𑆶𑆫𑆶𑆰𑆱𑇀𑆠𑇀𑆮𑆃𑆤𑇀𑆪𑆂𑇅𑆥𑆫𑆩𑆳
𑆠𑇀𑆩𑆼𑆠𑇀𑆪𑆶𑆢𑆳𑆲𑆹𑆠𑆂𑇅𑆪𑆾𑆬𑆾𑆑𑆠𑇀𑆫𑆪
𑆩𑆳𑆮𑆴𑆯𑇀𑆪𑆧𑆴𑆨𑆫𑇀𑆠𑇀𑆪𑆮𑇀𑆪𑆪𑆆𑆯𑇀𑆮𑆫𑆂𑇆
𑇑𑇗𑇆𑆪𑆱𑇀𑆩𑆳𑆠𑇀𑆑𑇀𑆰𑆫𑆩𑆠𑆵𑆠𑆾𑇁𑆲𑆩𑇀𑇅

𑆯𑇀𑆫𑆵
𑆓𑆵
𑇕𑇐𑇗

योगमातिष्ठोत्तिष्ठ
भारत ॥ ४ ॥ इति श्रीभगवद्गी
तासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां ।
योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसं
वादे कर्मब्रह्मार्पणयोगो नाम
चतुर्थोऽध्यायः ॥ भगवद्गी
ता ॥ अर्जुन उवाच संन्यासं कर्मणां कृष्ण

श्री
गी
५०७

[illegible]

𑆨𑆓𑆮𑆠𑇀𑇆 𑆤𑆮𑆳𑆱𑇀𑆠𑆴𑆩𑆣𑆪𑆱𑆁𑆱𑆼

𑆮𑆵𑆥𑇅𑆫𑆴𑆤𑆬𑆠𑆩𑆷𑆤𑆳𑆠𑇆𑇑𑇆𑆪

𑆗𑆼𑆱𑆾𑆮𑆵𑆤𑆴𑆩𑆥𑆘𑇅𑆫𑆴𑆟𑆥𑆩

𑆣𑆳𑆮𑆫𑆳𑇆 𑆥𑆝𑆁𑆪𑆳𑆤𑆴𑆬

𑆠𑆩𑇀𑆥𑇅𑆫𑆩𑆣𑆫𑆤𑆩𑆷𑆁𑆠𑆵𑇆

𑇒𑇆 𑆪𑆼𑆮𑆵𑆩𑆣𑆴𑆱𑆷𑆩𑆼𑆢𑆮𑆪𑇅

𑆮𑆴𑆫𑆢𑆷𑆪𑆩𑆷𑆓𑆵𑆩𑆠𑆁𑇆 𑆃

𑆯𑇀𑆫𑆵
𑆓𑆵
𑇕·𑇓

𑆱𑆶𑆫𑆳𑆂𑆨𑆱𑇀𑆥𑆫𑆁𑆱𑇀𑆩𑆼𑆮𑆵𑆤𑆳𑇅𑆑𑆴

𑆱𑇀𑆠𑆾𑆨𑆴𑆟𑆫𑆠𑇆𑇕𑇆𑆱𑇀𑆥𑆴𑆑𑆶𑆠𑆱

𑆓𑆵𑆬𑆴𑆑𑆾𑆨𑆴𑆢𑆽𑆮𑆱𑇀𑆠𑆶𑆨𑆶𑆓𑆳

𑆮𑆱𑇆𑆱𑆽𑆮𑆴𑆨𑆶𑆓𑆱𑆂𑆥𑆶𑆤𑆶𑆃𑆶

𑆨𑆁𑆥𑆠𑆶𑆩𑆼𑆱𑆓𑆳𑇆𑇖𑇆𑆥𑆷𑆮

𑆠𑇀𑆫𑆴𑆁𑆪𑆴𑆑𑆸𑆠𑇀𑆫𑆴𑆁𑆫𑆳𑆫𑆤𑆮𑆮𑆴𑆱

𑆓𑆨𑆶𑆠𑆂𑇆𑆤𑆩𑆴𑆱𑆁𑆤𑆳𑆪𑆓𑆳𑆓𑆳

२९१

𑆠𑆴 𑆨𑆢𑇀𑆫𑆼 𑆠𑆼𑆰 𑆮𑆴𑆰𑇀𑆟𑆶 𑆇 ॥ ॥ 𑆯𑇀𑆫

𑆨𑆢𑇀𑆫𑆁 𑆨𑆥 [illegible] 𑆓𑆪

[illegible] 𑆫𑆵 𑆱𑆶 𑆓𑆩 ॥ [illegible]

𑆨 [illegible] 𑆑𑆴 [illegible] 𑆑𑆼 ॥

𑆇 ॥ [illegible]

𑆯𑇀𑆫𑆵 𑆛𑆓𑆵

[illegible] 𑆪𑆂 ॥ [illegible]

५.७

𑆓𑆫𑆑 [illegible] 𑆪𑆪 [illegible]

𑆘𑆴𑆠𑆂 𑇅 𑇓 𑇅 𑆑𑆸𑆩𑆳𑆯𑇀𑆫𑆴𑆠𑇀𑆪

𑆣𑇀𑆫𑆶𑆮𑆁𑆱𑇀𑆡𑆶 𑆩𑆳𑆑𑆩𑆪𑆳𑆠𑇀𑆫𑆴𑆠𑆂 𑇅

𑆩𑆼𑆢𑆳 [illegible] 𑆑𑆵𑆢 [illegible] 𑆢𑆶

𑆮𑆠𑇀𑆠𑆼𑆱𑇀𑆠𑆶𑆩𑆴𑆮𑇀𑆫𑆠𑆂 𑇅 𑇐 𑇅 𑆩𑆴𑆠𑇀𑆠𑆳

𑆩𑆴𑆩𑆼𑆪𑆁 [illegible] 𑆥𑆸𑆫𑆪𑆳𑆠𑇀𑆠𑆩𑇀

𑆥𑆳𑆩𑆴𑆠𑆂 𑇅 𑆑𑆼𑆩𑆼𑆥𑆕𑆴𑆓𑆳𑆥

𑆓𑆩𑆳 𑇅 𑆓𑆠𑇀𑆮𑆳 𑆓𑆴𑆝𑆴𑆢𑆴𑆘𑇀𑆘𑆴𑆠𑆂 𑇅 𑇐𑇐

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] || 03 || [illegible]

[illegible] ||

[illegible]

[illegible] || 03 || [illegible]

[illegible]

कथितं विश्वरूपं तु । भैरवस्य

भगवत: ॥ ध्यानं तस्य

…

॥ ७४ ॥ …

… ॥ …

… । …

श्री
नगी

… ॥ ०७ ॥ …

५००

मम पत्रं । प्रथमं स्त्रीवेदा

स्मृता ॥ मम पुष्पैर्वकिरे

यदिच्छा । त्रिकर्मगात ॥४॥

त्रिविधं वरकर्मसंस्मृतं च

मम भक्ताः ॥ कार्यैरपि तु

बालेन तु मयेत इयं तु

स्तुत ॥४०॥ सैव विभक्ताः कि

श्री
गी
८०३

303

कदविवभुत्ति॥ स्तवमभु

विण्पित्ते। कभकतुंबिदध

भि॥ उ१॥ ओतुेस्नी। भ्यावस्नी

उ। भुषावेषभुरू। भवल

यं। यग। मा। त्रुरी। वक्ष। क्षत

मंवमे। रैवंस। भपाउ।

यैगि। सभ। षिङषट्यः॥

श्री
नागी

5.3

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

311

याहृसर्वंमैवबन्धुयंतपरं

मूर्ते ॥१२॥ सतःप्रसन्नःसे

श्रुतेर्विमर्श्यविवेकपदः ॥

छत्रंसज्जुगिरीन्द्रपरं

सत्यमूर्ते ॥१३॥ सद्गुरुपादपद्म

श्री
ज्ञा

उपेत्यसविवेकैः ॥ स्व

S-1

लोकान्हिप्रियवृत्तैः भोगिकं

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

३१३

सतवृभिर्हियसुं। सीयत
नुपकाभिरे॥ रमेकले
सपते सत। सुं भात्रुकं
सुतम्॥ ३०॥ यत्रुपद्रुपक
सतं।दलमसिवृवापन:॥
सीपतेसपभिक्षिभुं।तमुह
मपमाहतम॥३१॥ ...

श्री
रुगी

𑇆 𑆱𑆑𑆬𑆼𑆪𑆱𑇀𑆪𑆁𑇅𑆱𑆥𑆳𑆠𑆼𑆲𑆶

𑆲𑇀𑆩𑆱𑆵𑆪𑆼𑆠𑆼𑇆 𑆱𑆩𑆲𑇀𑆠𑆼𑆱𑆮𑆲𑇀

𑆠𑆁𑆠𑆠𑇀𑆠𑆶𑇅𑆱𑆩𑆱𑆩𑆱𑆢𑇀𑆮𑆳𑆠𑆼𑆱𑇆 𑇓𑇓𑇆

𑆠𑆁𑆠𑆠𑇀𑆠𑆶𑆱𑆴𑆢𑇀𑆠𑆴𑆮𑆴𑆣𑆼𑆱𑆵𑇅𑆮𑆶𑆢𑇀𑆣𑆳

𑆱𑇀𑆫𑆶𑆮𑆴𑆮𑆂𑆱𑇀𑆲𑆶𑆠𑆂𑇅𑆮𑆶𑆢𑇀𑆣𑆳𑆱𑆼𑆱𑆶

𑆬𑆼𑆮𑆱𑆲𑇀𑆩𑆪𑆲𑇀𑆲𑇀𑆩𑆳𑆮𑆴𑆢𑆴𑆠𑆼

𑆥𑆓𑇆 𑇓𑇓𑇆 𑆠𑆱𑇀𑆩𑆳𑆢𑆵𑆱𑆲𑆶𑆁

३१५

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

उत्त्यनैते ॥ यमेतुकर्म

उष । मङ्कतः यउयनैते ॥ ४७ ॥

यत्नै उपमिगनेय । श्रुते

भगवतिसन्ते ॥ कर्ह्मणैव

उमजीय । भगिहेवाङ्गीय

ते ॥ ४८ ॥ यमुहय । फउमते ॥

उपमुपुंनउमयत ॥ यम

𑆱𑆴𑆢𑇀𑆣𑆱𑇀𑆥𑆸𑆠𑆼𑆥𑆳𑆠𑆶। 𑆱𑆠𑆼𑆑𑇀𑆰𑆶𑆜

𑆫𑆼𑆤𑇀𑆢 ॥𑇓𑇓॥ 𑆃𑆡𑆴𑆱𑇀𑆫𑆵। 𑆨𑆓𑆮

𑆩𑆵𑆠𑆳। 𑆥𑇀𑆫𑆢𑆮𑆴𑆯𑆯𑇀𑆫𑆶। 𑆱𑆶𑆥𑆴𑆟

𑆪𑆁। 𑆪𑆼𑆓𑆩𑆤𑆳। 𑆩𑆶𑆱𑇀𑆫𑆵𑆤𑆩𑇀𑆟। 𑆱𑆶𑆤

𑆱𑇀𑆫𑆵 𑆩𑆁𑆮𑆼𑆱𑇀। 𑆠𑆴𑆮𑆴𑆟𑆴। 𑆱𑆶। 𑆪𑆼𑆓

𑆓𑆵 𑆤𑆩𑆁। 𑆩𑆥𑆶𑆫𑆩𑆼𑆥𑇀𑆫𑆪𑆂 ॥𑇐𑇑॥

𑇑𑇐𑇐

𑆥𑆤𑆶𑆫𑆮𑆳𑆪 ॥ 𑆩𑆑𑇀𑆰𑆩𑆥𑆩

320

3223

𑆪𑆩𑆮𑆑𑆚𑇀𑆖𑆳𑆪𑆳 𑇆𑇐𑇓𑇆 𑆱𑇀𑆮
𑆥𑆴𑆯𑆶𑆤𑆁 𑆅𑆥𑆑𑆸𑆠𑇀 𑆑𑆳𑆫𑇀𑆪
𑆥𑇀𑆪𑆰𑆳𑆓𑇀𑆤𑆴𑆁𑆠 𑇆 𑆮𑆴𑆮𑆴𑆣𑆂𑆱𑇀𑆮𑆫𑇀𑆪
𑆰𑆜𑇀𑆥𑆢𑆼 𑆩𑆽𑆮𑆁 𑆩𑆽𑆮 𑆅𑆥𑆱𑆫𑇀𑆓
𑇆𑇑𑇐𑇆 𑆱𑆫𑇀𑆓𑆽𑆮𑆓𑇀𑆤𑆵𑆑𑆾𑆜𑆥 𑇅
𑆑𑆤𑇀𑆢𑆫𑇀𑆥𑆑𑆼𑆅𑆑𑆼𑆂 𑇆 𑆱𑆷𑆫𑇀𑆪𑆽𑆮
𑆮𑆴𑆥𑆓𑆵𑆁𑆅𑆮 𑇅 𑆥𑆚𑇀𑆖𑆼𑆅𑆅𑆩𑆸𑆢𑆼

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

श्री गी

१०५

𑆃𑆠𑆠𑇀𑆮𑆳𑆫𑇀𑆡𑆮𑆢𑆬𑇀𑆥𑆁𑆖𑇅𑆠𑆠𑇀𑆠𑆳𑆩𑆱
𑆩𑆶𑆢𑆳𑆲𑆸𑆠𑆩𑇀𑇆𑇒𑇒𑇆𑆤𑆴𑆪𑆠𑆁𑆱
𑆕𑇀𑆓𑆫𑆲𑆴𑆠𑆁𑇅𑆃𑆫𑆳𑆓𑆢𑇀𑆮𑆼𑆰𑆠𑆂𑆑𑆸𑆠𑆁𑇆
𑆃𑆦𑆬𑆥𑇀𑆫𑆼𑆥𑇀𑆱𑆶𑆤𑆳𑆑𑆫𑇀𑆩𑇅𑆪𑆠𑇀𑆠𑆠𑇀𑆱𑆳
𑆠𑇀𑆠𑇀𑆮𑆴𑆑𑆩𑆶𑆖𑇀𑆪𑆠𑆼𑇆𑇒𑇓𑇆𑆪𑆠𑇀𑆠𑆶𑆑𑆳𑆩𑆼
𑆥𑇀𑆱𑆶𑆤𑆳𑆑𑆫𑇀𑆩𑇅𑆱𑆳𑆲𑆁𑆑𑆳𑆫𑆼𑆟𑆮𑆳𑆥𑆶
𑆤𑆂𑇆𑆑𑇀𑆫𑆴𑆪𑆠𑆼𑆧𑆲𑆶𑆬𑆳𑆪𑆳𑆱𑆁𑇅𑆠

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

देशक्षदमेवम् । स्वयज

वज्रूलस्तु । वृत्तिः साप्रतु

रस्तस्मी ॥३०॥ पञ्चद

ज्ञिनियाः । भस्तूतमम

वत ॥ मवतान्त्रिपगीतं स्व ।

वृत्तिः साप्रतुतमी ॥३१॥

वहयपयाणयपेतमवः पू

336

[illegible]

337

वपूर्वैस्तु ॥२०॥ मभिस्त भु

पः सोयं ॥ तुग स्ववपेवय ॥

ङ्क वि ङ्क गा भुङ्क ॥ रङ्क

ङ्क भङ्क वङ्क मा ॥२७॥ मेदं

ङ्क पाउ ङ्क ॥ य भुग पूपला

यङ्क ॥ ङ्क द भी भुग वङ्क

ङ्क भङ्क वङ्क मा ॥२७॥ नेषि

श्री
कागी
3

340

𑆇𑆰𑆳𑆥𑇀𑆫𑆗𑆴𑆫𑆴𑆫𑆴𑆤𑇀𑆩𑆼॥ 𑆩𑆓𑆳

𑆩𑆽𑆮𑆑𑆾𑆠𑇀𑆫𑆼𑆪𑆳𑆤𑆴𑆧𑆶𑆘𑇀𑆘𑆤𑆳𑆥𑇀𑆫

𑆪𑆳𑆥𑆫॥𑇙॥ 𑆢𑆸𑆩𑇀𑆫𑆮𑆶𑆩𑆶𑆢𑆸

𑆪𑆳𑆥𑆾𑆠𑇀𑆥𑆤𑇀𑆢𑆤𑆴𑆪𑆩𑇀𑆩𑆳॥

𑆯𑇀𑆫𑆵 𑆩𑆒𑆶𑆫𑆵𑆠𑇀𑆮𑆴𑆰𑆪𑆁𑆩𑆸𑆝𑇀𑆘𑆳𑆓𑆳

𑆓𑆵 𑆢𑇀𑆪𑆶𑆰𑆳𑆮𑆸𑆫𑆩𑆸𑆫𑆳॥𑇑𑇐॥𑆢𑆴𑆮𑆑𑆶

𑆩𑆮𑆵𑆬𑆥𑇀𑆫𑆩𑆵𑆪𑆝𑆮𑆑𑇀𑆫

𑆇𑇐 𑇓

मः अवेषक्तुतेश। मस्तुतिं

स्ततेपर्गं।। ९२।। ठत्तैम

भाठित्स्वांतेय। वस्त्रज्ञा

श्रितदृतः।। उतैमंतद्दृत

ठ्ठद्दृ। विमतेतस्वतुगं।। ९९।।

मवकम्ह्य्मस्।तुव

ॐमस्तृपस्त्रयः।। मदूम

मामवाधोडि । सम्भूतेपर
मब्ययम ॥ २० ॥ यडमम
वकम्र । मधिमब्रूम
मद्धः ॥ बुद्धिर्यगमपाश्
देवा । क्षितुः मडङ्कव ॥ २१ ॥
मक्षितुः मवमजा । म
द्रूमायतुषिषुभि ॥ पघेत

305

302

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

350

351

35

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

72

353

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

3-3

354

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

357

[illegible]

[illegible]

358